बच्चों को मालूम है मनुष्य जो भी सुनाते हैं वह किचड़ा। इसलिए भगवान कहते हैं हियर नो किचड़ा, सी नो किचड़ा, टॉक नो किचड़ा। कोई भी क्या-2 सुनाते हैं। है तो मनुष्य ना। तुमको तो सुनाने वाला निराकार परमपिता परमात्मा है। तुम सुनते हो, धारण करते हो, औरों को सुनाते हो। बाप ने सुनाया है यह भक्तिमार्ग का किचड़ा न सुनो। सुनाने वाले मिलते हैं तो सुनना भी है; परंतु सुनते हुये भी न सुनो। जानते हैं तमोप्रधान बातें ही सुनावेंगे। तुम जानते हो हम जो कुछ सुनते हैं वह दूसरा कोई मनुष्य सुना न सके। सुनाने वाला एक बाप ही है। कहते हैं ब्रह्मा को भगवान कहते हो? बोलो, नहीं। हम तो कहते हैं मनुष्य कब भगवान हो नहीं सकता। तुम ब्रह्मा को जानते नहीं हो। ब्रह्मा पतित है। झाड़ में देखो तमोप्रधान में खड़ा है। बहुत जन्मों के अंत में। तो क्या हुआ, थोड़ा धैर्य से सुनो। हम ब्रह्मा को देवता भी नहीं कहते। न उनको भगवान ही कहते हैं। यह बाप समझाते हैं जिसमें मैं प्रवेश किया है यह उनके बहुत जन्मों के अंत का शरीर है, ब्रह्मा नहीं तो कहाँ से आये? यह पतित पावन बनते हैं तो देवता बनते हैं। हम भी पतित हैं तो और सारी दुनिया भी पतित हैं, वैसे यह भी पतित हैं। बहुत जन्मों के अंत का जन्म है इनका। ब्रह्मा ज़रूर चाहिए जिस द्वारा ब्राह्मण एडॉप्ट होते हैं। ब्राह्मण फिर देवता बनेंगे। मनुष्य समझते नहीं। उनको खड़ा होकर समझाना चाहिए। यह नम्बरवन पतित हैं। हमको श्रीमत मिलती है यह बहुत जन्मों के अंत का जन्म है। सो तो पतित ठहरा ना। हम भी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं। कुमार-कुमारियाँ कहने से क्रिमिनल आई ठंडी हो जाती है। फिर भी बाप कहते हैं भाई-2 समझो, तो शरीर का भान न रहेगा। कलियुग में सभी है तमोप्रधान मनुष्य; परंतु मनुष्य अपन को तमोप्रधान समझते थोड़े ही हैं। तुम हो अब संगमयुग पर। चित्र ले जाना चाहिए। झाड़ में कितना क्लीयर है। कोई भी सन्यासी हो, बड़ा गुरु हो, फिर मनुष्य ठहरा ना। हठयोग को भी भक्ति कहेंगे। आधा कल्प है ही भक्ति कल्ट। भक्ति से दुर्गति। मनुष्यों को तो कुछ भी ज्ञान है नहीं। सभी तमोप्रधान हैं। तुम बच्चे जानते हो ब्राह्मण ही रूहानी बच्चे हैं। जो कुछ भी सुनाते हैं वह मनुष्य ही सुनाते हैं। शास्त्रों का ज्ञान सुनाते हैं। कुछ न कुछ अपनी मत से सुनाते हैं। वह है ही मनुष्य मत। तुम्हारी है ईश्वरीय मत। सद्गति के लिए मत सिर्फ एक बाप के पास ही होती है। पैसे भल कितने भी हैं फिर भी शूद्र सम्प्रदाय पतित हैं। वैश्यसम्प्रदाय भी नहीं हैं। भल व्यापारी करते हैं; परंतु वैश्य कुल का नाम हो जाता है। कलियुग में है ही शूद्र। पहरा ही सारा कलियुग का है। सभी हैं शूद्र सम्प्रदाय। इस ज्ञान को मनुष्य नहीं जानते हैं। तुम अभी अपन को मनुष्य नहीं रूह समझते हो। बाप हम आत्माओं को सुनाते हैं। तुम समझाते हो ईश्वर सर्वव्यापी होता नहीं। आत्मा सभी हैं, उस आत्मा में फिर सर्वव्यापी विकार हैं। तो यह बाप ही समझाते हैं। मनुष्य की बातें सुनते हैं पर ध्यान नहीं। बाबा कब ध्यान से सुनते नहीं। सुनते हुये जैसे कि नहीं सुनते हैं। सुनने से कोई फायदा है नहीं। फायदा सुनना है। फिर भी बच्चे आते हैं। सुनते आये हैं जैसे सुना नहीं। इसलिए फिर सुनाने आता ही नहीं। बाप के संग में वह स्मृति कम हो जाती है। नशा रहता है हम बहुत ऊँच गवर्मेंट हैं। हम गवर्मेंट से ज़मीन लेवें, अपील करें, अच्छा नहीं लगता। तुम किसके बच्चे हो! उनसे ज़मीन का टुकड़ा भी क्यों मांगते हो? हम विश्व के मालिक के बच्चे हैं। सभी कुछ हमको बाप से मिलता है। ज़मीन आदि की बात भी बाबा को आखिर(आँखों) में नहीं आती। विनाश होने वाली गवर्मेंट से हम क्या माँगे, उनको हम रजिस्टरी करावें, आखिर(आँखों) में ही नहीं आता। बंदरों से ज़मीन मांगे! खुद भीख माँग रहे हैं। उनसे हमारे बच्चे ज़मीन माँगे? जोर से नशा आ जाता है। जितना नज़दीक उतना ही नशा चढ़ता है। हम तो पाण्डव गवर्मेंट हैं। वह है कौरव गवर्मेंट। विनाश काले विपरीत बुद्धि है। अखबार आदि में कितना डालते हैं। तुम थैंक्स लिख दो। तुमने तो उपमा की है थैंक यू वैरी मच। बस। दिल को कोई चोट नहीं लगनी चाहिए। सुना जैसे कि न सुना। तो चोट क्यों लगे। सेकण्ड व सेकण्ड जो होता है। ड्रामा। पुरुषार्थ तो करना ही है। ऐसे थोड़े ही

ड्रामा कह बैठ जावेगा। बच्चों को नशा रहता है बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाप तो नई दुनिया, नई नॉलेज ही देते हैं। और कोई के पास यह नॉलेज होती ही नहीं। मनुष्य जो शूद्र हैं उनको भी ज़रा नॉलेज नहीं है। तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। विकर्म होने से फिर वह धारणा भी खत्म हो जाती है। सुनते हैं, चढ़ते हैं, फिर कुछ किया तो गिर पड़ते हैं। फिर उनकी वाणी में तासीर न रहता, जो दूसरे को कहेंगे देहीअभिमानी भव। खुद होगा ही नहीं, तो उनको पंडित कहेंगे। अपन को शरीर समझना बिल्कुल रांग है। यह है ही अनराइटियस दुनिया। वह है राइटियस दुनिया। ..... इस समय है ही शूद्र वर्ण। एक भी और कोई है नहीं। न वैश्य है, न ब्राह्मण है। न देवता। फिर तुम आकर ब्राह्मण बनते हो। बाप क्या समझाते हैं इस पर विचार-सागर-मंथन करना चाहिए। बहुत कहते हैं ब्रह्मा को तुम भगवान क्यों कहते हो? यह करते हो? अरे, बाप खुद कहते हैं मैं पतित शरीर में प्रवेश करता हूँ। उनका जो गुस्सा हो वह ठंडा कराये देना चाहिए। मुझे प्रवेश उनमें करना है जो नम्बरवन पतित है। समझाने वाला भी अच्छा देहीअभिमानी होगा वह समझा सकेंगे। देहअभिमानी के पास धारणा होगी ही नहीं। इस समय जो तुम्हारी सर्विस चल रही है बिल्कुल एक्युरेट। यह ख्याल न आना चाहिए, इतनी मेहनत की कोई निकला नहीं। क्यों नहीं सर्विस होती है। प्रजा बहुत बन रही है। तुम बहुत सर्विस कर रहे हो। अभी बच्चे अच्छी रीत सर्विस करते हैं। समझाने का शौक है। समझाने बिगर रह न सकेंगे। समझाने समय भी देहीअभिमानी होंगे तो थकावट भी न होगी। फिर गला आदि घुटेगा नहीं। देहअभिमान होने से गले आदि खराब हो जाते हैं। अभी तो सभी पुरुषार्थी हैं ना। बड़ा धैर्य से बैठ समझाना चाहिए। आज-कल करते तो काल खा जावेगा। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।